आयुर्वेद दिवस 2025

चर्चा में क्यों?

आयुर्वेद दिवस, जिसे पहली बार वर्ष 2016 में मनाया गया था, **अब प्रत्येक वर्ष 23 सितंबर को मनाया जाएगा** तथा पूर्व में धन्वंतरि जयंती (धनतेरस) **पर मनाने की प्रथा को समाप्त** कर दिया जाएगा।

मुख्य बिंदु

- **आयुर्वेद दिवस के बारे में:**
- 23 सितंबर की **निश्चित तिथि** के साथ, आयुर्वेद दिवस वैश्विक कैलेंडर में एक स्थायी स्थान प्राप्त करने के लिये अग्रसर है, जो आयुर्वेद की **समृद्ध परंपरा** के माध्यम से विश्वव्यापी स्वास्थ्य, कल्याण तथा पारिस्थितिकीय स्थिरता में योगदान देगा।
- आयुर्वेद **व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम** से विश्व स्तर पर फैल चुका है, जिसने **तिब्बत, चीन और अन्य क्षेत्रों में** पारंपरिक औषधि-प्रणालियों को प्रभावित किया है।
- यह एक **वैश्विक आंदोलन** के रूप में विकसित हो चुका है, जिसे 24 देशों में पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा **100 से अधिक देश इसके उत्पादों का आयात** करते हैं।
- **आयुर्वेद दिवस 2025**
  - **विषय है**- "**लोगों और ग्रह के लिये आयुर्वेद**", जिसमें वैश्विक कल्याण तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर विशेष ज़ोर दिया जाएगा।
    - समारोह में **जीवनशैली संबंधी विकार, जलवायु संबंधी रोग और तनाव प्रबंधन** जैसी वैश्विक चुनौतियों के समाधान पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जिसमें आयुर्वेद को एक व्यवहार्य समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।
  - आयुष मंत्रालय जागरूकता अभियान, युवा सहभागिता कार्यक्रम, स्वास्थ्य परामर्श और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग सहित विभिन्न गतिविधियों का नेतृत्व करेगा।
- **आयुर्वेद दिवस 2024 की उपलब्धियाँ**
  - 9वें आयुर्वेद दिवस (2024) ने भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को चिह्नित किया
  - अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (AIIA) के द्वितीय चरण का उद्घाटन।
  - आयुर्वेद में **चार उत्कृष्टता केंद्रों** का शुभारंभ।
  - "**देश का प्रकृति संरक्षण अभियान**" का परिचय।
- **महत्त्व**
  - प्रथम अखिल भारतीय NSSO सर्वेक्षण ने पुष्टि की है कि आयुर्वेद **भारत के ग्रामीण और शहरी,** दोनों ही क्षेत्रों में सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली उपचार प्रणाली है।
- **आयुर्वेद के विकास के लिये की गई पहल**
  - राष्ट्रीय आयुष मिशन
  - आयुष क्षेत्र पर नए पोर्टल
  - ACCR पोर्टल और आयुष संजीवनी ऐप

आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु-** चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि -** शल्यचिकित्सकों की शाखा

आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।
- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

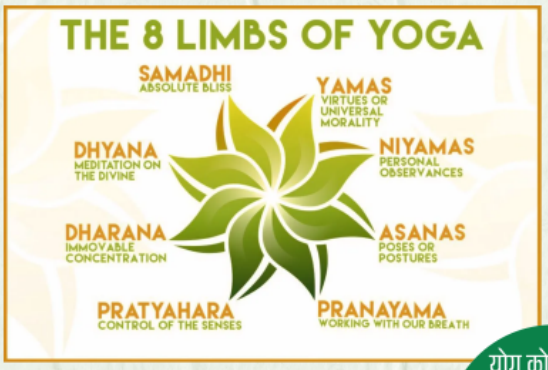

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

दृष्टि The Vision | d
Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ayurveda-day-2025